मिश्र के कला चिंतन, लोक संस्कृति और आलोचना साहित्य पर हुई चर्चा

साहित्य एकेडमी की विद्यानिवास मिश्र जन्मशती के अवसर 2 दिवसीय संगोष्ठी का समापन

नई दिल्ली। साहित्य एकेडमी द्वारा विद्यानिवास मिश्र की जन्मशत वार्षिकी के अवसर पर आयोजित 2 दिवसीय संगोष्ठी का समापन हुआ। आज का प्रथम सत्र विद्यानिवास मिश्र का कला चिंतन विषय पर था जो नर्मदा प्रसाद उपाध्याय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें माधव हाडा एवं ज्योतिष जोशी ने अपने विचार व्यक्त किए।

सर्वप्रथम जोशी ने कहा कि विद्यानिवास मिश्र की कला दृष्टि बहुत ही व्यापक और अपूर्व थी। उन्होंने अपने विश्लेषण में पारंपरिक कला दृष्टि का पक्ष लिया। वे कला को संपूर्णता को मापने का पैमाना मानते थे।

उन्होंने आधुनिक भारतीय कला को भी नैतिकता और भारतीय मनीषा तथा उसकी चिंतन के परिप्रेक्ष्य में देखा और विवेचित किया। माधव हाडा ने कहा कि भारतीय कला की निर्भरता मिथकों पर है और वे निरंतर रूपांतरित होते रहते हैं। मिश्र की दृष्टि में भारतीय कला में एकरूपता का कोई नियम नहीं है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि विद्यानिवास मिश्र भारतीय कला के जीवंत अधिवक्ता थे।

विद्यानिवास मिश्र की लोक संस्कृति और आलोचना साहित्य पर रामदेव शुक्ल की अध्यक्षता में हुए अंतिम सत्र में सुरेंद्र दुबे, कृष्ण कुमार सिंह, विद्याबिंदु सिंह, अनुराधा गुप्ता ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि विद्यानिवास मिश्र का गद्य देश के सबसे बेहतरीन गद्य का नमूना है। सुरेंद्र दुबे ने कहा कि उनका साहित्य लोक और संस्कृति दोनों से बेहद समृद्ध है। उनका लोक पुरातन/इतिहास या अतीत नहीं, बल्कि सतत् और गतिमान है इसीलिए वह लंबी यात्रा तय करता है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, विद्वान, छात्र-छात्राएं, शोधार्थी और पत्रकार उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एकेडमी के उपसचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।